चतुर्थ परिच्छेद

4.1 समस्या की परिभाषा

4.2 समस्या उत्पत्ति के कारण

4.3 समस्या चुनाव के सिद्धान्त

4.4 समस्या के स्रोत

4.5 समस्याओं के प्रकार

4.6 संगीत में शोध की समस्याएं

1 पुस्तकों व पुस्तकालय सम्बंधी

2 आर्थिक सम्बंधी

3 भाषायी विविधता सम्बंधी

4 उत्तरी व दक्षिणी संगीत पद्धति के स्वरूपात्मक अलगाव सम्बंधी

5 लोक संस्कृति में विविधता सम्बंधी

6 क्षेत्र सम्बंधी

7 आपसी मतभेद सम्बंधी

8 निर्देशक व निर्देशन सम्बंधी

9 शोध के प्रति शोधार्थी के उत्तरदायित्व सम्बंधी

10 महिला शोधार्थी सम्बंधी

11 दत्तों को एकत्रित करने सम्बंधी

क साक्षात्कार से सम्बंधित

ख प्रश्नावली से सम्बंधित

12 विश्लेषण सम्बंधी

13 शोध प्रंबध के टंकण सम्बंधी

14 मौखिक परीक्षा सम्बंधी

4.7 समस्याओं से प्रभावित शोधार्थियों के वर्ग (आकृति द्वारा प्रदर्शित)

चतुर्थ परिच्छेद

समस्या की परिभाषा

हर समस्या अपने में एक चुनौती है तथा हर बाधा किसी कमी की पूर्व-सूचिका है। इसके लिए क्रियाशीलता की व समुचित समझ की आवश्यकता है, क्योंकि उपयुक्त दृष्टि, सम्यक् विचार, सम्यक चिन्तन तथा प्रयास के बिना किसी भी समस्या को सुलझाना कठिन है।

किसी भी क्षेत्र में शोध का प्रारम्भ, समस्या से होता है। अपनी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए मानव-समाज अनेक साधनों को अपनाता है। जब आवश्यकता की सन्तुष्टि किसी उपलब्ध साधन द्वारा नहीं हो पाती तो नवीन समस्या का जन्म होता है अर्थात् आवश्यकता की सन्तुष्टि के मार्ग में उपस्थित बाधा ही 'समस्या' है। साधनों के उपलब्ध होते ही बाधा दूर होने से तथा आवश्यकता की सन्तुष्टि हो जाने से समस्या का अन्त हो जाता है जिसे हम इस प्रकार दर्शा सकते हैं।

आवश्यकता - साधन = समस्या

अवरोध जितना तीव्र होगा व आवश्यकता जितनी प्रबल होगी, समस्या उतनी ही गहन होगी।

समस्या उत्पत्ति के कारण

समस्या का जन्म उन परिस्थितियों में होता है जब हम ऐसा अनुभव करते हैं कि कोई ऐसी बात पैदा हो गई है, जिसके उचित समाधान के बिना कठिनाई का अस्तित्व बना ही रहेगा। समस्या की उत्पत्ति उन परिस्थितियों में होती है जिसमें कार्यकर्त्ता जागरूक होता है तथा उसे इस बात की अनुभूति होती है कि सुचारू रूप से कार्य- संचालन के मार्ग में बाधाएं हैं व इन बाधाओं को दूर किया जा सकता है तथा उनको दूर करने से समस्या का समाधान सम्भव है। दैनिक जीवन में हम अपने कार्यक्षेत्र में अनेक कठिनाइयों का अनुभव करते हैं फिर भी उनसे मुख मोड़ लेते हैं। ज़िज्ञासा, प्रवृत्ति, अंसतोष तथा बौद्धिक रूचि शोधकर्ता के सामने शोध के कई द्वार खोल देती है।

जिज्ञासा तथा वैज्ञानिक प्रवृत्तिः-जब तक हमारे अन्दर जिज्ञासा न होगी तथा हमारी प्रवृत्ति वैज्ञानिक न होगी कोई समस्या हमें दिखाई न देंगी । जिज्ञासा तथा वैज्ञानिक प्रवृत्ति का व्यक्ति

प्रत्येक क्षेत्र में अनेक समस्याएं देखता है तथा उनके समाधान की आवश्यकता और महत्व को समझता है।

असंतोषः- असंतोष प्रवृत्ति के व्यक्ति में जिज्ञासा, उसमें शोध-वृत्ति पैदा करती है, जब असंतोष को दूर करने की समस्या शोधकर्त्ता के सामने होती है तो वह नवीन मार्गों से समस्या का समाधान करता है।

बौद्धिक रूचिः- बौद्धिक रूचि शोधकर्त्ता के सामने शोध के द्वार खोल देती है और वह किसी व्यवहारिक समस्या का समाधान ढूंढने में लग जाता है।

ज्ञान में दरारः- कोई भी समस्या उस समय स्वंय अभिव्यक्त हो उठती है जब व्यक्ति का ज्ञान किसी जानकारी की तर्कयुक्त ढंग से व्याख्या न कर सकें।

तथ्य की व्याख्याः- समस्या की उत्पत्ति का कारण कभी-कभी व्यक्ति द्वारा किसी तथ्य की उपलब्धि भी होती है, जिसकी व्याख्या कर सकने में अथवा उसका कारण बता सकने में वह अपने आपको असमर्थ पाता है।

समस्या चुनाव के सिद्धान्त

समस्या के चयन में कुछ सिद्धान्तों का अनुसरण किया जाता है जो निम्न हैं:-

समस्या शोधकर्त्ता के रूचि के अनुसार होनी चाहिए- समस्या शोधकर्त्ता के रूचि के अनुसार होनी चाहिए क्योंकि समस्या शोधकर्ता की रूचि के अनुरूप न होगी तो वह उस पर ठीक प्रकार से कार्य नही कर सकेगा।

समस्या की व्यवहारिक उपयोगिता- किसी समस्या का शोध द्वारा समाधान करने का कारण यह है कि किसी को उससे समुचित लाभ प्राप्त हो सके समस्या ऐसी होनी चाहिए जिसकी कोई सैद्वान्तिक अथवा व्यावारिक उपयोगिता हो।

शोधकर्त्ता का स्वयं का अनुभव-शोधकर्त्ता यदि जिज्ञासु है और सजग दृष्टि से कार्य करने वाला है तथा उसका दृष्टिकोण वैज्ञानिक है तो स्वंय का अनुभव भी शोधकर्त्ता के लिए अनेक समस्याएँ प्रस्तुत कर सकता है, किन्तु उसे ढूंढने में भी सफल हो जाता है।

समस्या के लिए क्षेत्र का निश्चय-शोधकर्त्ता को सबसे पहले समस्या के क्षेत्र का निश्चय करना होगा कि किस विषय के किस क्षेत्र में कार्य करना है। यह निश्चय उस क्षेत्र में उसकी विशेष अभिरूचि और सूझ पर निर्भर होगा।

समस्या स्पष्ट हो- शोधकर्त्ता को किसी भी समस्या पर कार्य करने से पहले यह देख लेना चाहिए कि समस्या स्पष्ट तथा मूर्त हो।

शोधकर्त्ता की अभियोग्यता-समस्या का चुनाव शोधकर्त्ता की अभियोग्यता के अनुरूप होना चाहिए, क्योंकि यदि शोधकर्त्ता किसी के कहने से कई प्रविधिक समस्या ले लेगा जो उसकी अभियोग्यता के अनुरूप न हो तो शोधकर्त्ता को कार्य पूरा करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

समस्या की व्यवाहारिक विशेषताएँः-

1 व्यय- शोधकर्त्ता वही समस्या ले जिसके लिए वह अपनी समर्थ से व्यय कर सकें।

2 समय- समस्या के चुनाव मे समय में कार्य पूरा हो इसका ध्यान रखना भी अत्यन्त आवश्यक है।

3 निर्देशन की प्राप्ति समस्या-ऐसी हो जिसमें सरलता से निर्देशक और निर्देशन प्राप्त हो सकें।

4 आँकड़ों की सम्भावना- शोधकर्त्ता को वही समस्या लेनी होगी जिसके आँकड़े प्राप्त हो सकें, ऐसी समस्या जिसके आँकड़े प्राप्त करने दुर्लभ हो, ऐसी समस्या शोधकर्त्ता को नहीं लेने चाहिए।

नैतिक समस्या-ऐसी समस्या जो समाज के नैतिक मूल्यों का हनन करने वाली हो अन्यथा शोधकर्त्ता को कोई सहयोग न मिले, ऐसी समस्या का चुनाव नही करना चाहिए।

समस्या के स्रोत

समस्या के चयन के लिए यह जानना आवश्यक होता है कि समस्या के चुनाव के लिए क्या-क्या स्रोत है।

1 परस्पर विरोधी अनुभवों में - ऐसे व्यक्ति के परस्पर विरोधी अनुभवों में से शोधकर्त्ता के लिऐ समस्या खोजी जा सकती है जो या तो शिक्षा प्राप्त करने का कार्य कर रहा है

या अन्य किसी रूप में शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम में सलंग्न है शिक्षा के किसी भी क्षेत्र में उपलब्ध होने वाली असंगतियाँ प्रतिरोध, विवादास्पद बातें तथा अपरिक्षित निष्कर्ष शोध के विषय बनाये जा सकते हैं।

2 पूर्ण हो चुके शोधकार्य में - पूर्ण हो चुके कार्य की सूची में या उसी क्षेत्र की या उस से सम्बंधित क्षेत्रों की समस्याओं को लेकर भी शोध कार्य हो सकता है।

3 शोध के सुझावों में - शोधकर्त्ताओं द्वारा दिये गये वांछित शोधों के सुझाव में शोध हेतु समस्याएं खोजी जा सकती है। इन सुझावों के अध्ययन एंव मनन से हमें ऐसे संकेत प्राप्त होते हैं जिनके समुचित अनुगमन से हम शोध के लिए उपयोगी शीर्षक प्राप्त कर सकते हैं।

4 स्पष्टीकरणों की रिक्तताओं या कमियों से -अज्ञान व अन्धकार के क्षेत्र समस्याओं की ओर संकेत करते हैं । उनके समाधान द्वारा प्रस्तुत रिक्तताओं एंव कमियों को समुचित रूप से भरा जा सकता है।

5 प्राचीन सिद्वान्तों में - प्राचीन सिद्वान्तों की उपयुक्तत्ता के विषय में उत्पन्न सन्देहों के कारण प्रायः उन सिद्वातों का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक हो जाता है और इस प्रकार नवीन शोध समस्या का उद्भव हो जाता है।

6 कक्षा, विद्यालय या समुदाय में - कक्षा, विद्यालय या समुदाय ये सभी समस्याओं के तर्कसंगत स्रोत है। इनमें उत्पन्न समस्याओं का शिक्षक को प्रतिदिन सामना करना पड़ता है। कक्षा व्याख्यान, कक्षा-विवेचनाएँ, परिसम्वाद-प्रतिवेदन तथा कक्षा के बाहर विद्यार्थियों एंव ख्याति प्राप्त कुशल शिक्षकों के साथ किये गये विचारों के आदान-प्रदान में भी प्रेरणादायक समस्याओं का चुनाव व सुझाव प्राप्त हो सकता है।

समस्याओं के प्रकार

1 सर्वेक्षण प्रकार की समस्याएँ - हमारे देश में षिक्षा, मनोविज्ञान तथा समाज-विज्ञान का अध्ययन बहुत होता है। इसके अर्न्तगत किसी विशेष क्षेत्र अथवा उस क्षेत्र से प्राप्त गुणों का सर्वेक्षण कर लेते हैं और उसके आधार पर यह बताने का प्रयास करते है कि किस क्षेत्र, वर्ग अथवा समाज में किस प्रकार के गुण पाये जाते हैं।

2 दार्शनिक समस्याएं - ये वे समस्याएं हैं जिनकी प्रकृति दार्शनिक होती है तथा जिनका अध्ययन भी दार्शनिक पृष्ठभूमि में ही किया जाता है।

3 ऐतिहासिक समस्याएं - ऐतिहासिक समस्याएं वे समस्याएं हैं जिनमें किसी विशेष अवधि में प्रवृत्ति अथवा विचारधारा के विकास अथवा उसकी स्थिति का अध्ययन करते हैं।

4 सैद्वान्तिक समस्याएं - जिन समस्याओं में सैद्वान्तिक प्रश्न निहित होते है उन्हें सैद्वान्तिक समस्या कहते हैं। उनका उद्देश्य नये सिद्वान्तों की खोज एवं प्रचलित सिद्वान्तों में परिवर्तन होता है।

5 व्यवहारिक समस्याएं - व्यावहारिक समस्याएं वे समस्याएं हैं जिनका सम्बंध व्यवहार-पक्ष में होता है। जीवन के व्यवहार पक्ष में आने वाली कठिनाइयों एंव समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया जाता है।

6 सह-सम्बन्धात्मक समस्याएं - जिन समस्याओं में दो चरों में सम्बंध ढूँढ़ने का प्रयास किया जाता है, उन्हें सह-सम्बन्धात्मक समस्या कहते है।

7 प्रायोगिक समस्याएं - इस प्रकार की समस्याओं मे स्वतन्त्र चल-राशियों में परिवर्तन कर आश्रित चल-राशि पर उसका प्रभाव देखते हैं।

संगीत में शोध की समस्याएं

आज तथ्यों के स्पष्टीकरण के लिए शोधकार्य की आवश्यकता अनिवार्य होती जा रही है, संगीत विषय में शोधकार्य एक महान साधना है जिसके लिए मन और मस्तिष्क को शोधकार्य पर केन्द्रित करके ही कुछ खोजा तथा अर्जित किया जा सकता है । संगीत के अनेक पहलुओं पर शोधकार्य हो चुका है व जारी है, किन्तु शोधकार्य की सामग्री जुटाने में शोधकर्त्ताओं को विषयानुसार जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है वो अग्रलिखित हैं ।

1. पुस्तकों व पुस्तकालय सम्बन्धी

संगीत सामान्य विषय न होकर कला है, जिसे ललित कलाओं में सर्वोच्च माना गया है । विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में संगीत एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है । संगीत के दो रूप क्रियात्मक व सैद्धान्तिक हैं । सम्पन्न पुस्तकालय शोध का मुख्य आधार है । शोध-कार्य करने के लिए तद्विषयक पुस्तकों का व पुस्तकालय का बड़ा महत्व है । बहुत से विश्वविद्यालयों तथा संगीत संस्थाओं में पुस्तकों की कमी है । संगीत के अधिकतम ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखित होने के कारण व इस भाषा का ज्ञान न होने के कारण शोधकर्त्ताओं को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है । यहीं नहीं अंग्रेजी भाषा में लिखित पुस्तकों का अनुवाद करने

में भी काफी समय नष्ट होता है । कई मौलिक ग्रंथों का पुस्तकालयों में अभाव होने के कारण बहुत से तथ्यों की पुष्टि नहीं हो पाती है । विज्ञान तथा तकनीकी नवीनतम पुस्तकों की सूची नियमित रूप से अखबारों व पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है जिससे उस विषय में हुई शोध एवं प्रकाशित नई पुरानी पुस्तकों की जानकारी मिलती रहती है किन्तु संगीत की पुस्तकों का प्रकाशन ही कम है और जो प्रकाशित भी होती है उनकी जानकारी समय से नहीं मिल पाती , कई बार विषय से सम्बन्धित पुस्तकें बाजार में नियमित समय पर न पहुंचने से समस्या का सामना करना पड़ता है ।

अतः पुस्तकों की कमी व तथ्य का स्पष्ट समझ न होने के कारण शोधकार्य में बाधा का सामना करते रहना शोध कार्य के क्षेत्र में बड़ी समस्या है ।

आर्थिक सम्बन्धी

शोधकार्य में शोधार्थी की आर्थिक स्थिति भी अपना विशेष महत्व रखती है । शोधार्थी या तो अमीर हो या किसी अच्छे पद पर कार्यरत हो अथवा उसे छात्रवृत्ति मिल रही हो तभी वह शोधकार्य नियमित व सुचारू रूप से जारी रख सकता है । आर्थिक समस्या शोध-कार्य में सबसे बड़ी रूकावट है । कोई विद्यार्थी अगर नौकरी के लिए भटक रहा हो तो ऐसे में शोध कार्य का खर्च वहन करना उसके लिए कठिन होता है । इसी कारण कई योग्य छात्रों की योग्यता दबी रह जाती है । यही नहीं, विभाग या सरकार से केवल एक-दो छात्रों को आर्थिक सहायता मिलती है । इस प्रकार आर्थिक स्थिति शोध के क्षेत्र में एक ऐसी समस्या है जिसकी जड़ काफी फैल चुकी है व जो शोध क्षेत्र में एक चुनौती है ।

भाषायी-विविधता सम्बन्धी

भाषा की विविधता शोध के क्षेत्र में एक ऐसी खाई है जिसे भरना संभव नहीं लगता । भारत में संविधान के अनुसार 18 भाषाएं बोली जाती हैं जिनमें इन भाषाओं की कई उपभाषायें भी हैं । हिन्दीं हमारी राष्ट्रभाषा है लेकिन हिन्दी का प्रयोग बहुत कम किया जाता है । कई बार शोधार्थी छात्र सर्वेक्षणात्मक अध्ययन के लिए कई स्थानों में जाता है जहां उसे भाषायी विविधता सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ता है ।

उत्तरी व दक्षिणी संगीत पद्धति के स्वरूपात्मक अलगाव सम्बन्धी

उत्तरी व दक्षिणी संगीत पद्धति सम्बन्धी स्वरूपात्मक अलगाव की समस्याओं के कारण शोधकर्त्ता को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है । दोनों पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए सर्वप्रथम दोनों पद्धतियों का बारीकियों से पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है ।

लोक संस्कृति में विविधता सम्बन्धी

संगीत भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का एक प्रमुख अंग है । भारतीय लोकसंगीत जो लाखों साधारण व्यक्तियों की बहुमूल्य सम्पत्ति है, शास्त्रीय संगीत से भी पुरातन है । लोकसंगीत वस्तुतः वनफूल है जो स्वतन्त्र वातावरण में खिलते और विकसित होते हैं । वैसे तो "लोककला" व्यापक अर्थ में सम्पूर्ण मानवता पर लागू होती है किन्तु वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में यह साधारण ग्रामीणों की कला है और ग्रामीण जनता की स्वतः भावनाओं की अभिव्यक्ति है । इन लोक गीतों व लोकनृत्यों का इस देश की पृष्ठभूमि में विशिष्ट स्थान है । भिन्न-भिन्न गांवों की भाषा जिसे साधारण बोल-चाल की भाषा में "बोली" कहते हैं, अलग-2 होती है । इस प्रकार लोक-संस्कृति में एकरूपता का अभाव तथा लोक-गीतों, लोकवाद्यों तथा लोक-नृत्यों में भी विविधता के कारण शोधकर्त्ताओं को कई समस्याओं से जूझना पड़ता है । जो शोधार्थी लोक-गीतों से सम्बन्धित विषय लेकर अध्ययन करते हैं या दो स्थानों के लोक-गीतों पर लोकवाद्यों या लोकगीतों पर आलोचनात्मक या तुलनात्मक अध्ययन करते हैं, उन्हें इन समस्याओं का सामना करना पड़ता है । यही नहीं इसके अतिरिक्त सबसे बड़ी समस्या जो शोधार्थी को आती है वह है बोली में विविधता के कारण दत्तों को ठीक समय पर एकत्रित न कर पाने की समस्या जिससे शोधकर्त्ता का कार्य कभी-कभी समय पर समाप्त नहीं हो पाता ।

क्षेत्र सम्बन्धी

कई बार ऐसा भी होता है कि शोध-विषय अछूता होने के कारण उससे सम्बन्धित कोई जानकारी हमें पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा ग्रंथों से उपलब्ध नहीं होती, अगर हो भी तो नाममात्र की । फलस्वरूप शोध-छात्र स्वयं अपनी परिकल्पना के आधार पर विषय को नवीन रूप देता है तथा उस पर कार्य करना आरम्भ करता है, लेकिन विषय नवीन होने के कारण कुछ समय पश्चात् अपने को असहाय पाता है और उस विषय को बदलवाना चाहता है जोकि एक

ऐसी समस्या है, जिसका प्रभाव शोधार्थी की आर्थिक स्थिति पर ही नहीं पड़ता बल्कि उसकी मानसिक स्थिति भी शोचनीय हो जाती है तथा उसके धन व समय दोनों की हानि होती है ।

क्षेत्र सम्बन्धी समस्या में दूसरी समस्या, जिसका सामना शोधकर्त्ताओं को करना पड़ता है वह है, विषय सम्बन्धी क्षेत्र की पूर्ण जानकारी न होना, कुछ शोधकर्त्ता, निर्देशक की उस विषय में रूचि होने कारण ऐसे विषय का चयन कर लेते हैं जिस विषय का ज्ञान उन्हें पूर्ण रूप से नहीं होता तथा न ही उस विषय के प्रति उनकी जिज्ञासा व इच्छा होती है । परिणामस्वरूप इससे शोधकर्त्ता अंपना कार्य मन लगा नहीं कर पाता और उस विषय के प्रति जिज्ञासा व इच्छा न होने के कारण उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है व कई बार शोध विषय ही बदलवाना पड़ता है ।

आपसी मतभेद सम्बंधी

संगीत ऐसा विषय है जिसमें ईष्या व आपसी मतभेद भी अपने अस्तित्व को बनाये हुए है । यह एक ऐसी कड़वी सच्चाई है, जिसे नकारा नहीं जा सकता है । कई बार दत्तों को एकत्र करते समय दो या अधिक उत्तरदाताओं से प्रश्न पूछे जाते हैं, परिणामस्वरूप कई बार एक ही उत्तरदाता तथ्यों की पुष्टि करता है व बाकि उसकी हां में हां मिलाते जाते हैं व कई बार आपसी मतभेद के कारण एक दूसरे की बात की आलोचना करते हैं, जिससे शोधकर्त्ता किसी भी परिणाम तक नहीं पहुंच पाता, न ही उसमें इतना साहस होता है कि उस माहौल में अपने तथ्य की पुष्टि कर सके ।

निर्देशक व निर्देशन सम्बंधी

शोध-कार्य में अच्छे निर्देशकों का अभाव एक बड़ी समस्या है । अधिकांश अच्छे संगीतज्ञ तो अपनी कला का उपयोग देश-विदेश में घूम कर अर्थोपार्जन में कर रहे हैं । इतना ही नहीं, कई बार तो धन की मात्रा कम होने की अवस्था में वे इसे अपने स्तर से निम्नकोटि का समझते हुए अपनी कला का प्रदर्शन नहीं करते । फिर शोध-कार्य में वे अपना योगदान देने में असमर्थ पाते हैं । इसके अतिरिक्त कभी-कभी निर्देशक समय की उपयोगिता का ध्यान नहीं रखते वह शोधार्थी को समय तो दे देते हैं परन्तु निर्धारित समय पर उन्हें मिलते नहीं हैं, अगर मिलें भी तो कोई न कोई समस्या बता कर कार्य को कल पर छोड़ देते हैं । इसी कारण कई बार शोधार्थी कार्य अवधि में कार्य पूरा नहीं कर पाता इसके अतिरिक्त कई बार निर्देशक से पूछे

गए प्रश्नों का शोधकर्त्ता को संतोषजनक उत्तर नही मिल पाता । निर्देशक कई बार अपनी अहम भावना के कारण शोधार्थी द्वारा किए गए कार्य की अवहेलना कर देते हैं और शोधार्थी द्वारा लिखी गई सामग्री को ठीक समय पर देख कर नहीं देते ।

शोध के प्रति शोधार्थी के उत्तरदायित्व सम्बंधी

शोध वही शोधार्थी कर सकता है जो अनुशासित हो व समय की उपयोगिता को समझता हो। जिसमें नवीन ज्ञान की वृद्धि करने की जिज्ञासा हो । कई बार शोधार्थी अपने दायित्व को नहीं समझते व पूरी तरह निर्देशक पर निर्भर रहते हैं, शोधार्थी अपना अधिकार समझते हैं कि निर्देशक उन्हें विस्तारपूर्वक शोध सामग्री उपलब्ध करायें, यहीं नहीं शोधार्थी समय पर शोध सामग्री का निरीक्षण भी नहीं करवाते व समय के मूल्य को न जानते हुए दिए गए समय पर निर्देशक के पास नहीं जाते ।

महिला शोधार्थी सम्बंधी

दत्तों के संकलन हेतु महिला शोधार्थियों को कई दुर्गम क्षेत्रों में जाना पड़ता है, जहां उनके साथ कई बार उचित व्यवहार नहीं होता ।

दत्तों को एकत्रित करने सम्बंधी

सामाजिक अनुसंधान का आधार विश्वसनीय तथ्य हैं । अनुसंधानकर्त्ता अपनी समस्या से सम्बंधित स्रोतों का पता लगाने के पश्चात् तथ्यों का संकलन करता है जिसके लिए वह कई प्रविधियों का चुनाव अपने शोधकार्य में करता है । सर्वेक्षणात्मक व प्रश्नावली द्वारा अपने दत्तों को एकत्रित करने में प्रयोग में लाता है । दत्तों को एकत्रित करने सम्बंधी समस्याएं काफी विस्तृत है ।

(क) साक्षात्कार से सम्बन्धी

शोधार्थी साक्षात्कार स्रोत द्वारा जब दत्त एकत्रित करता है तो साक्षात्कारकर्त्ता कई बार दिए गए समय पर नहीं मिलते हैं अगर मिल भी जाते है तो ठीक उत्तर देने में संकोच करते हैं या किसी प्रलोभन की आशा रखते हैं । अकसर ऐसा होता है कि कई बार शोधकर्त्ता को साक्षात्कारकर्त्ता की भाषा समझने में कठिनाई होने के कारण शोधार्थी कही बात को पूर्ण रूप से नहीं समझ पाता है तो कई बार साक्षात्कारकर्त्ता उसके द्वारा किए गए कार्यक्रम उच्च स्तर पर

दिखाने के लिए जोर डालता है । अनुचित व्यवहार भी शोधकार्य में बड़ी समस्या है । अकसर विषय-अधिकारी व्यक्ति द्वारा सामग्री के विषय में बताने के लिए भी मना कर दिया जाता है । शोधार्थी जिस परिस्थिति में अवलोकन करना चाहता है उसमें विषय से सम्बन्धित सामग्री उपलब्ध न होने के कारण भी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं । कई बार दत्तों को एकत्रित करते हुए संकीर्ण दृष्टिकोण के लोग भी सम्पर्क में आते हैं जो अपनी कोई भी रचना या साक्षात्कार को देने से कतराते हैं, कई बार तो पैसों की मांग के साथ-साथ यह भी सुनते को मिलता है कि आप को तो अमुक लाभ होगा, नौकरी मिलेगी, हमें क्या मिलेगा । ऐसी परिस्थिति में न तो शोधार्थी के मूल्यवान समय को समझ पाते हैं न ही उसकी समस्या को ।

(ख) प्रश्नावली से सम्बन्धित

प्रश्नावली द्वारा दत्तों को एकत्रित करते समय जिस मूल समस्या का सामना शोधकर्त्ता को करना पड़ता है वह है प्रश्नावली को भरकर भेजने में आनाकानी करना, उत्तरदाता कई बार अपनी लिखाई में प्रश्नावली को भरने में संकोच करते हैं, कई बार अपना नाम व पता ही नहीं बताना चाहते। कभी-कभी अपनी व्यस्तता को प्रकट करते हुए ये कहकर टाल देते हैं कि कल प्रश्नावली भरकर देंगे और उनका वह कल ही नहीं आता । बहुत से उत्तरदाता प्रश्नावली को भरकर देने में अहसान मानते हैं और अधिकतर उत्तरदाता सच्चाई से मुँह छुपाते हैं । अक्सर प्रश्नावली में टिकट व लिफाफा भेजने के पश्चात् भी डाक द्वारा भेजी गई प्रश्नावली समय पर प्राप्त नहीं होती न ही उत्तरादाता उसे भेजने का कोई प्रयत्न करते हैं ।

विश्लेषण सम्बन्धी

शोध में तथ्यों को एकत्रित करना एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है लेकिन केवल दत्तों को एकत्रित करने से ही किसी उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती, जब तक उन एकत्रित दत्तों को सुव्यस्थित करके उनका विश्लेषण न किया जायें । तथ्यों का विश्लेषण किए बिना शोधकार्य में दत्तों का वास्तविक उपयोग नहीं होता । अतः विश्लेषण की प्रक्रिया को पूरा किए बिना, शोध का कार्य सच्चे अर्थो में अधूरा ही रहता है । एकत्रित सामग्री को ठीक तरह से सारिणीयन तथा सांख्यिकीय करने पर कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है । कई बार शोधार्थी उत्तरों के सत्य को नहीं पाता या एकत्रित सामग्री विषयानुकूल नहीं होती, जिसके कारण शोधार्थी का सारा अध्ययन का समय नष्ट हो जाता है । अतः जो भी प्रविधि का प्रयोग दत्तों को एकत्रित करते

समय किया गया हो, उसकी जांच पूर्णता ग्राह्यता, संगतपूर्णता तथा एकरूपता से न किये जाने के कारण समस्याओं की उत्पत्ति होती है ।

शोधप्रबंध के टंकण की समस्या

शोधप्रबंध में व्यावहारिक भाग को टंकण करने में विशेष रूप से कठिनाई होती है, आज का युग कम्प्यूटर का युग है लेकिन कई बार अर्धचन्द्र, मींड़ इत्यादि चिन्हों का इंगित करने में अभी भी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है ।

मौखिक परीक्षा सम्बन्धी

कई बार शोधार्थी समय पर शोध प्रबंध की प्रतियां जमा करवा देता है लेकिन उसकी मौखिक परीक्षा को काफी समय लग जाता है । परीक्षा न होने का कारण कुछ भी हो, लेकिन शोधार्थी को इस समस्या से जूझना पड़ता है ।

समस्याओं से प्रभावित शोधार्थियों के वर्ग

'वर्ग' से वर्गीकरण बना है जब हम वस्तुओं का मूल्यांकन उसके गुण, धर्म, जाति लक्षण आदि विशेषताओं के आधार पर या समानता, असमानता के आधार से करने की सुविधा के साथ निश्चित उद्देश्य को ध्यान में रखकर वर्ग बनाते हैं, तो वह वर्गीकरण कहलाता है । ज्ञान का प्रत्येक शाखा में हमें मनुष्य में वर्गीकरण करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है, जिसकी सहायता से हम किसी विषय के विविध अंगों और उपांगों का ज्ञान अधिक स्पष्ट, सूक्ष्म और तुलनात्मक रूप में प्राप्त कर सकते हैं । शोध करते समय प्रत्येक शोधार्थी को अलग-अलग समस्याओं से जूझना पड़ता है, समस्या चाहे छोटी हो या बड़ी, प्रत्येक शोधार्थी को उसका सामना करना ही पड़ता है, चाहे वो किसी भी वर्ग से सम्बन्धित क्यों न हो । अलग-अलग वर्गों के कारण समस्या का स्वरूप बदल जाता है । प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने समस्याओं से प्रभावित शोधार्थियों को निम्न वर्गों में बांटा है :- 1. विकलांग वर्ग 2. सामान्य वर्ग 3. सांगीतिक वर्ग

(क) अनुवांशिक वर्ग (ख) सामान्य वर्ग